पार्श्वनाथ भगवान की आरती

जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा ।
सुर नर मुनि जन तुम चरणन की करते नित सेवा । टेक ।
पौष बदी ग्यारस काशी में, आनन्द अति भारी ।
अश्वसेन वामा माता उर लीनो अवतारी । जय ।
श्याम वरण नव हस्त काय पग उरग लखन सोहे ।
सुरकृत अति अनुप पट भूषण सबका मन मोहे । जय ।
जलते देख नाग नागिन को मंत्र नवकार दिया ।
हरा कमठ का मान ज्ञान का भानु प्रकाश किया । जय ।
मात-पिता तुम स्वामी मेरे आश करुँ किसकी ।
तुम बिन दाता और न कोइ शरण गहूँ जिसकी । जय ।
तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अन्तर्यामी ।
स्वर्ग मोक्ष के दाता तुम हो त्रिभुवन के स्वामी । जय ।
दीनबन्धु दुःखहरण जिनेश्वर तुम ही हो मेरे ।
द्यो शिवधाम को वास दास हम द्वार खड़े तेरे । जय ।
विपद विकार मिटाओ मन का अर्ज सुनो दाता ।
'सेवक' द्वय कर जोड़ प्रभु के चरणों चित लाता । जय ।